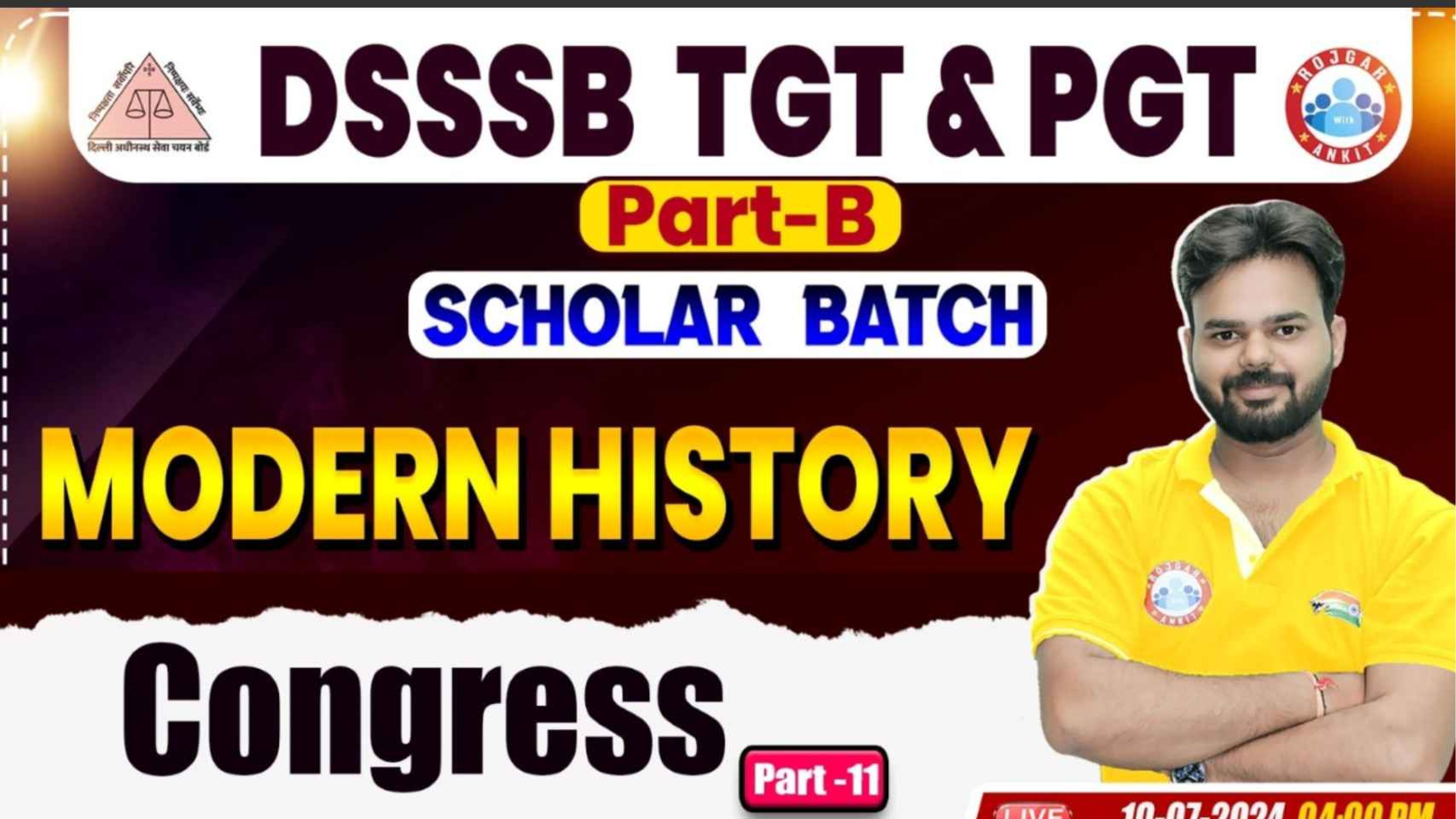
DSSSB TGT & PGT
Part-B
SCHOLAR BATCH
MODERN HISTORY
Congress
Part -11

महात्मा गांधी

गांधी जी के जीवन से जुड़े कुछ महत्वपूर्ण तथ्य -

⇒ अल्बर्ट आइंस्टीन ने महात्मा गांधी के लिए कहा था कि - "आने वाली पीढ़ियां शायद ही कभी यह विश्वास कर सकेंगी कि हाड़ - मांस का ऐसा मानव कभी इस धरती पर विचरण करता था।"

⇒ जन्म - 2 अक्टूबर 1869

⇒ जन्मस्थान - पोरबंदर - गुजरात (काठियावाड़)

⇒ दादा - उत्तमचंद गांधी (पोरबंदर राजा के यहां दीवान थे)

⇒ पिता - करमचंद गांधी (पोरबंदर, राजकोट, बांकनेर के दीवान थे)
इन्हें 'काबा गांधी' के नाम से जाना जाता है।
इन्होंने 4 शादियां की। चौथी पत्नी का नाम पुतलीबाई था।

⇒ माता - पुतलीबाई

⇒ भाई - लक्ष्मीदास, कृष्ण दास (करसनदास)

⇒ बहन - रालिया बेन

⇒ वास्तविक नाम - मोहनदास करमचंद गांधी।

⇒ माता-पिता और उनके मित्र गांधी जी को 'मोनियां' कहकर पुकारते थे।

⇒ पत्नी - कस्तूरबा गांधी (पुत्री - गोकुल दास माकन)
शादी - 1883
सगाई - 1876
कस्तूरबा उम्र में गांधी जी से छह माह बड़ी थी।
इनका जन्म अप्रैल 1869 में पोरबंदर नगर (काठियावाड़) में हुआ था।
पुत्र - इनके 4 पुत्र थे।

① हरि लाल
② मणिलाल } भारत में जन्म

③ रामदास
④ देवदास } द. अफ्रिका में जन्म

हरिलाल (1888 - 18 जून 1948)

⇒ ये अपने पिता की तरह बैरिस्टर की उच्च शिक्षा के लिये ब्रिटेन जाना चाहते थे, परन्तु गांधी जी ने यह कह कर इस प्रस्ताव को ठुकरा दिया कि पस्चात्य शैली की शिक्षा अंग्रेजों के विरुद्ध संघर्ष में सहायक नही होगी।

Digvijay Sir GS

⇒ इस कारण हरिलाल ने गांधी जी के विरूद्ध विद्रोह कर दिया एवं 1911 में घर छोड़ दिया।
⇒ कुछ दिनों के लिये उन्होंनें 1930 के दशक में इस्लाम धर्म को अपना लिया और अपना नाम बदलकर अब्दुल्ला गांधी कर लिया। लेकिन बाद में वे आर्यसमाजी हो गये।
⇒ गांधी जी के साथ रहने वाली उनकी एक पोती मनु हरिलाल की ही पुत्री थी। इनकी पत्नी का नाम गुलाब था।

मणिलाल (1892 - 5 अप्रैल 1956) -

⇒ यह दक्षिण अफ्रीका में ही स्थाई रूप से बस गए। इसी देश को उन्होंनें अपनी मातृभूमि बना लिया। आज भी उनके वंशज वहीं हैं।
⇒ वहां पर 1918 से वे गांधी जी के साप्ताहिक समाचार पत्र 'इंडियन ओपीनियन' के प्रकाशन का कार्य-भार डरबन के फीनिक्स आश्रम में संभालने लगे थे।
⇒ अपने पिता की तरह वे भी दक्षिण अफ्रीका में कई बार जेल गए। उनकी पत्नी का नाम सुशीला मशरूवाला था। उनके दो पुत्रियों का नाम सीता एवं इला तथा एक पुत्र का नाम अरूण है।

रामदास (1897 - 1969) -

- इन्होंनें गांधी जी की मृत्यु पर उन्हें मुखाग्नि दी थी।
- पत्नी - निर्मला
- पुत्र - कानू गांधी
- कानू गांधी (1917 - 1986) गांधी जी के व्यक्तिगत स्टाफ में से एक थे। उनकी प्रसिद्धि गांधी जी के फोटोग्राफर के रूप में थी।
- प्रसिद्ध उद्योगपति जी॰ डी॰ बिरला ने उन्हें कैमरे व रील खरीदने के लिये पैसे दिए थे। कानू गांधी को 'महात्मा गांधी के हनुमान' की उपाधि मिली थी।
- गांधी जी के 1947 में नोआखली अभियान के समय की एक फिल्म कानू गांधी ने ही बनाया था।
- इनकी पत्नी का नाम आभा गांधी था, जो कि गांधी जी के साथ हमेशा रहती थी, और जिनके गोद में ही गांधी जी ने लक्ष्मीनारायण मंदिर या बिड़ला मंदिर में अपनी अंतिम सांसें ली थीं।
⇒ कानू गांधी के द्वारा ही शूट किए गए गांधी जी के कुछ पिक्चर को रिचर्ड एटनबरो ने अपनी फिल्म गांधी में दिखाया था।

Digvijay Sir GS

देवदास (1900 – 1957) –

⇒ ये गांधी जी के सबसे छोटे पुत्र थे।

⇒ इनका श्री राजगोपालाचारी की पुत्री लक्ष्मी के साथ प्रेम विवाह हुआ था।

Note – प्रसिद्ध उद्योगपति जमनालाल बजाज को गांधी जी का पांचवा पुत्र कहकर पुकारा जाता है।

गांधी जी के विचारों की प्रेरणास्त्रोत –

⇒ गांधी जी ने पहली बार 1889 में गीता का अध्ययन किया।

⇒ उन्होंने भगवद्गीता को 'आध्यात्मिक संदर्भों की पुस्तक' कहा।

⇒ सितम्बर 1894 में ही रूसी विद्वान लियो टॉल्सटाय की पुस्तक 'तुम्हारे हृदय में ईश्वर का राज्य' का अध्ययन किया।

⇒ गांधी जी के एक प्रसिद्ध विचार 'पाप से घृणा करो न कि पापियों से' लियो टॉल्सटाय के विचार से प्रभावित था।

⇒ उनका सविनय अवज्ञा संबंधी विचार अमेरिकी समाज सुधारक और लेखक हेनरी डेविड थोरो की पुस्तक 'सिविल डिसओबिडियेंस' के विचारधारा से प्रभावित था।

⇒ गांधी जी के विचार से भी सहमत थे कि – 'वही सरकार सबसे अच्छी है जो सबसे कम दिनों तक शासन करती है।'

⇒ सितंबर 1894 में उन्होंने बाइबिल और कुरान का अध्ययन किया।

⇒ गांधी जी के विचारों पर बाइबिल के विशेष अध्याय 'पर्वत प्रवचन' ने भी काफी प्रभाव डाला।

⇒ जॉन रस्किन की पुस्तक Unto the Last का उन्होंने 1904 में अध्ययन किया।

⇒ वे इससे इतना प्रभावित हुए कि उसका गुजराती भाषा में अनुवाद ही 'सर्वोदय' के नाम से कर दिया।

⇒ वे जैन धर्म से भी प्रभावित हुए। इसमें सबसे महत्वपूर्ण भूमिका जैन मुनि श्री रायचंद्र भाई ने निभाई थी।

⇒ गांधी जी के अहिंसा संबंधी विचारों पर इस जैन विद्वान के विचारों का प्रभाव दृष्टिगोचर होता है।

गांधी जी की ब्रिटेन यात्रा –

⇒ वकालत की डिग्री के लिए उन्होंने 1888 में लंदन की यात्रा की।

⇒ वहां के एक शाकाहारी क्लब के कार्यकारिणी समिति के सदस्य बने और उसकी पत्रिका 'वेजिटेरियन' के लिए लेख लिखे।

वहाँ पर उन्होंने बाइबिल एवं भगवद्गीता को पढ़ा। भगवद्गीता को उन्होंने सबसे पहले सर एडविन आर्नोल्ड के अंग्रेजी अनुवाद में पढ़ा।

⇒ जून 1890 में लंदन की मैट्रिक परीक्षा उत्तीर्ण की। इसके साथ वे कानून की भी पढ़ाई करते रहे।

⇒ गांधी जी ने लंदन के एक प्रसिद्ध कानून महाविद्यालय 'इनर टेंपल' में 10 जून 1891 को बैरिस्टर की परीक्षा उत्तीर्ण कर ली।

⇒ उनका नाम 11 जून 1891 को उच्च न्यायालय की तालिका में आ गया। इसके बाद वे भारत लौट आये। इसके पूर्व ही उनकी माता की मृत्यु हो गयी।

⇒ भारत में आने के बाद उन्होंने राजकोट तथा बंबई में वकालत की प्रैक्टिस प्रारम्भ की। परन्तु इस पेशे में उन्हें बहुत सफलता नहीं मिली।

दक्षिण अफ्रीका जाने का प्रस्ताव

⇒ इसी समय गांधी जी के बड़े भाई लक्ष्मीदास के पास पोरबंदर की एक मेमन फर्म का प्रस्ताव उनके नाम आया, जिसमें गांधी जी को दक्षिण अफ्रीका में आकर उनके लिए एक मुकदमा लड़ना था।

⇒ इस फर्म का नाम 'दादा अब्दुला एंड कंपनी' जिसका दक्षिण अफ्रीका में एक शानदार व्यापार चल रहा था।

⇒ इनका 40,000 पौंड का दावा था। प्रतिपक्षी तैय्यब हाजी खां मुहम्मद थे, जो थे तो अब्दुल्ला के संबंधी, परंतु जिनके साथ व्यापार के सिलसिले में उनके संबंध खराब चल रहे थे।

⇒ यह मुकदमा ट्रांसवाल में चल रहा था। प्रतिपक्षी तैय्यब हाजी प्रिटोरिया में रहता था।

⇒ उपरोक्त प्रस्ताव दादा अब्दुल्ला के साझेदार सेठ अब्दुल करीम झवेरी की ओर से आया था।

⇒ गांधी जी को इस मुकदमे के लिए अपने एक वर्ष का समय दक्षिण अफ्रीका में बिताना था।

⇒ उनको पहले दर्जे का मार्ग व्यय, निवास तथा भोजन खर्च के अलावा 105 पौंड प्रति मास मिलना था। गांधी जी ने यह प्रस्ताव स्वीकार कर लिया।

Digvijay Sir GS

⇒ 1893 के अप्रैल महीने में गांधी जी 'एस. एस. तिलष्णा' नामक जहाज से दक्षिण अफ्रीका के लिए रवाना हुए।

⇒ वे लामू, मुम्बासा होते हुए मई माह के लगभग अंत में नटाल पहुँचे। नटाल के बंदरगाह को उस समय 'डरबन' कहा जाता था।

⇒ दक्षिण अफ्रीका के नटाल उच्च न्यायालय में अधिवक्ता के रूप में पंजीकृत होने वाले के प्रथम भारतीय थे।

⇒ गांधीजी ने वहां सोचा कि उनका धर्म दोनों की मित्रता कराना और दोनों रिश्तेदारों को फिर से भावनात्मक रूप से जोड़ देना है।

⇒ गांधी जी ने समझौते के लिए जी-तोड़ मेहनत की और पंचनिर्णय के द्वारा मुकदमा का जो निर्णय हुआ उसमें जीत गए। अब्दुला जीत गये।

Digvijay Sir GS

महात्मा गांधी

मॉरित्सबर्ग कांड

गांधी जी जिस समय दक्षिण अफ्रीका के दौरे पर थे, उस समय भारत की ही भांति वहां पर भी अंग्रेजों का शासन था, जो कि अपनी अश्वेत प्रजा जिसमें भारतीय भी शामिल थे, के साथ काफी दुर्व्यवहार करते थे। इस रंगभेद की नीति का गांधी जी को भी स्वयं बड़ा कड़वा अनुभव हुआ
1893 में एक बार वे डरबन से प्रिटोरिया तक की यात्रा प्रथम श्रेणी के रेल से कर रहे थे, तो रास्ते में 'मॉरित्सबर्ग' नामक स्थान में कुछ गोरे लोगों के द्वारा उन्हें ट्रेन से उतारकर फेंक दिया गया।
मॉरित्सबर्ग उन दिनों नटाल की राजधानी हुआ करती थी। वह रात उन्होंने सर्दियों में ठिठुरते हुए अंधकार युक्त प्रतीक्षालय में काटी।
इस मॉरित्सबर्ग कांड ने गांधी जी की आत्मा को बुरी तरह से झकझोर कर रख दिया।
इस कांड के बाद उन्होंने निश्चय किया कि उन्हें चाहे जो भी कीमत चुकानी पड़े, वे हर अन्याय के खिलाफ लड़ेंगे और अफ्रीका में ही रहकर भारतीयों के अधिकारों को लेकर संघर्ष करेंगे।
इस प्रकार, जो गांधी जी दक्षिण अफ्रीका मात्र एक वर्ष के लिए गए थे, उन्होंने वहां पर अपना करीब बाईस वर्षों तक का एक लंबा समय व्यतीत किया।

दक्षिण अफ्रीका में प्रथम संघर्ष-

मुकदमे की समाप्ति के पश्चात गांधी जी ने सर्वप्रथम 'हिन्दुस्तानियों से मताधिकार छीन लेने का विधेयक' के विरुद्ध अपना संघर्ष प्रारम्भ किया जो कि नटाल विधानसभा के समक्ष प्रस्तुत किया गया था।
उस समय वहां के कानून के अनुसार, लगभग 250 ऐसे हिन्दुस्तानी मताधिकार योग्य माने गये, जो संपत्तिशाली थे और सरकार को कर देते थे। इस मताधिकार का प्रयोग करने युरोपियनों की संख्या लगभग 10000 थी।
गांधी जी के अनुसार - "उपरोक्त विधेयक, जिसके द्वारा उन थोड़े से हिन्दुस्तानियों से भी यह अधिकार छीन लिए जाने थे, हमारी मौत की दिशा में पहला कदम या भारतीयों की हस्ती मिटा देने की ओर पहला कदम होगा।"

⇒ गांधी जी ने प्रवासी भारतीयों को संगठित कर आंदोलन छेड़ दिया। लेकिन अंततः यह विधेयक पास हो गया।

⇒ गांधी जी के प्रचार कार्य के ही परिणामस्वरूप भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने दिसम्बर 1894 के अपने वार्षिक मद्रास अधिवेशन (अध्यक्ष–अल्फ्रेड वेब) में मताधिकार विधेयक के विरोध में प्रस्ताव पेश किया।

नटाल इंडिया कांग्रेस –

⇒ दक्षिण अफ्रीका आंदोलन के बेहतर संचालन हेतु एक संगठन की आवश्यकता महसूस हो रही थी।

⇒ दादा अब्दुल्ला के निवास स्थान पर हुयी एक बैठक के पश्चात 22 मई 1894 को एक संगठन का जन्म हुआ।

⇒ भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के 1893 के लाहौर अधिवेशन के अध्यक्ष दादा भाई नौरोजी के प्रति सम्मान व्यक्त करते हुए उन्होंने अपने नए संगठन का नाम 'नटाल इंडियन कांग्रेस' रखा।

गिरमिटिया मजदूरों के लिए संघर्ष –

⇒ गांधी जी ने दक्षिण अफ्रीका में रहते हुए गिरमिटिया मजदूरों के मामले को भी उठाया।

⇒ इस आंदोलन की प्रेरणा एक मद्रासी गिरमिटिया मजदूर बालासुंदरम के दुख को देखकर मिली थी, जिसे कि उसके मालिक ने बुरी तरह से पीटा था।

⇒ गांधी जी ने पहले गिरमिटियों से संबंधित छानबीन की।

⇒ गिरमिटिया वे मजदूर थे, जो एक सहमति के तहत पांच वर्ष या उससे कम समय के लिए मजदूरी करने हेतु दक्षिण अफ्रीका पहुंचे थे।

⇒ साधारण मजदूर वर्ग और गिरमिटिया मजदूर वर्ग में अंतर था। यदि साधारण मजदूर अपनी नौकरी छोड़ देता था, तो मालिक उसके विरुद्ध दीवानी दावा कर सकता था, परंतु उसे फौजदारी में नहीं ले जा सकता था और यदि गिरमिटिया मजदूर अपने मालिक को छोड़ दे, तो वह फौजदारी गुनाह माना जाता था।

⇒ हिंदुस्तानियों को गिरमिटिया मजदूर रखने की अनुमति नहीं थी।

⇒ गिरमिटियां मजदूर के ऊपर यहां के गोरे मालिकों के द्वारा तरह-तरह के जुल्म किए जाते थे।

⇒ 1894 में गिरमिटिया हिंदुस्तानियों पर प्रत्येक वर्ष 25 पौंड का अर्थात् 375 रु का कर लगाने के कानून का मसविदा नटाल की सरकार ने तैयार किया।

MG रानाडे
↑
GK गोखले
↑
महात्मागांधी

⇒ तब गांधी जी ने इसके विरुद्ध आंदोलन प्रारंभ किया। 25 पाउंड का कर तो नामंजूर कर दिया गया, परंतु हर एक हिंदुस्तानी से 3 पौंड का कर लेने की स्वीकृति वहां के वायसराय लार्ड एल्गिन ने प्रदान की।

⇒ आंदोलन के परिणामस्वरूप गिरमिटियों पर लगा 3 पौंड का वार्षिक कर तो सन् 1909 में हटा दिया गया, लेकिन गिरमिटिया प्रथा चलती रही।

⇒ 31 जुलाई 1917 को गिरमिटिया प्रथा समाप्त हो गई। उस समय गांधी जी भारत में थे और यहां भी वह इसके विरुद्ध आंदोलन जारी रखा।

ग्रीन पैंफलेट -

⇒ जून 1896 में गांधी जी अपने परिवार को भी दक्षिण अफ्रीका लाने के लिए हिंदुस्तान वापस लौटे।

⇒ भारत आगमन के समय गांधी जी ने जहाज पर ही, दक्षिण अफ्रीका में ब्रिटिश सरकार के शोषण के जो तौर तरीके देखे थे, उसे कागज पर लिख डाला और राजकोट में पहुंचकर उसे छपवाया।

⇒ इसका मुख्य पृष्ठ चूंकि हरा था, इसलिए वह 'ग्रीन पैंफलेट' के नाम से पुकारा गया।

⇒ इस यात्रा के दौरान गांधी जी ने फिरोजशाह मेहता, बाल गंगाधर तिलक और गोपाल कृष्ण गोखले जैसे लोगों से मुलाकात की।

⇒ इसके बाद दक्षिण अफ्रीका की जब उन्होंने पुनर्यात्रा की, तो वहां पर उन्हें 'बोर युद्ध' का दर्शन हुआ।

बोर युद्ध (1899-1902) एवं गांधी जी -

⇒ द॰ अफ्रीका में बसी हुई डच प्रजा को 'बोर' या 'बलंदा' कहा जाता य

⇒ द॰ अफ्रीका में सर्वप्रथम डच पहुंचे थे। उन्होंने वहां के मूल निवासिय की उपजाऊ भूमि छीनकर खेती-बाड़ी प्रारम्भ कर दी थी।

⇒ जब साम्राज्यवादी ब्रिटेन ने भी यहां अपना प्रभाव बढ़ाने का निर्णय किय तो स्वाभाविक रूप से डचों और अंग्रेजों के बीच संघर्ष प्रारंभ हो गया।

⇒ संघर्ष के परिणामस्वरूप नटाल और केप कॉलोनी पर अंग्रेजों के पक्ष में और ओरेंज फ्री स्टेट तथा ट्रांसवाल डचों के पक्ष में चला गया।

⇒ कुछ समय बाद डचों के नियंत्रण वाले ट्रांसवाल में सोने और हीरों की खानें मिली, तब अंग्रेजों ने भी उस पर कब्जा करने की कोशिश क और इसी के परिणामस्वरूप बोर युद्ध प्रारंभ हुआ।

⇒ बोर लोगों के प्रति सहानुभूति होने के बावजूद भी इस युद्ध में गांध जी ने अंग्रेजों का साथ दिया।

⇒ उन्होंने 1899 में 'इंडियन एम्बुलेंस कोर' का गठन किया, जिसके नेता स्वयं गांधी जी थे।

⇒ इसके द्वारा उन्होंने 'बोर युद्ध' के मोर्चे पर घायल सैनिकों की देखभाल व चिकित्सा की। अंग्रेजों को इस युद्ध में सफलता मिली।

⇒ जनरल बूलर गांधी जी और उनके सहयोगियों की प्रशंसा की। कोर के मुखियाओं को 'बोर पदक' मिले।

कलकत्ता कांग्रेस अधिवेशन 1901 –

⇒ इसके बाद गांधी जी 1901 में भारत लौट आए। उस वर्ष कांग्रेस का वार्षिक अधिवेशन में 'दिनशा एडूलजी वाचा' की अध्यक्षता में हो रहा था।

⇒ गांधी जी ने भी इस अधिवेशन में भाग लिया था, जो कि गांधी जी के द्वारा किसी कांग्रेस अधिवेशन में भाग लेने की पहली घटना थी।

⇒ इस अधिवेशन में गांधी जी को कांग्रेस के कई नेताओं, जैसे फिरोजशाह मेहता, तिलक, गोखले आदि से मिलने का अवसर मिला।

⇒ कलकत्ता में गांधी जी गोखले के मेहमान थे, जो कि गांधी जी के राजनीतिक गुरू थे।

गांधी जी का प्रथम सत्याग्रह – Asian Reg. Bill

⇒ जब 1907 में ट्रांसवाल में 'एशियाई पंजीकरण विधेयक' पास हो गया, तब गांधी जी को यह विश्वास हो गया कि वह विरोध करने, याचिकाएं देने और प्रार्थना की जिस कार्य-विधि का दृढ़ता से अनुसरण कर रहे थे, वह असफल रही।

⇒ इसी परिस्थिति में उन्होंने एक नई कार्य-विधि का विकास किया, जो 'पैसिव रेजिस्टेंस' या 'निष्क्रिय प्रतिरोध' कहलाई। इसमें शाब्दिक और बल-प्रदर्शन की पूरी मनाही थी। और शारीरिक बल प्रदर्शन की पूरी मनाही थी। (सत्याग्रह)

⇒ जनवरी 1908 में पंजीकरण कानून तोड़ने के अपराध में वह गिरफ्तार किए गए और जेल में डाल दिए गए। अगले महीने सरकार के साथ तथाकथित समझौता हो जाने के बाद वह छोड़ दिए गए।

⇒ लेकिन यह समझौता अधिक दिनों तक नहीं चल सका और तब उन्हें फिर से सत्याग्रह आंदोलन चलाना पड़ा।

Digvijay Sir GS

इंडियन ओपीनियन का प्रकाशन -

⇒ गांधी जी ने वहां पर एक समाचार पत्र 'इंडियन ओपीनियन' के 1904 में प्रकाशन में भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

⇒ इस समाचार पत्र के प्रकाशन का प्रस्ताव उनके सम्मुख मदनजीत ने रखा था।

⇒ यद्यपि (मनसुख लाल नाजर) इस समाचार-पत्र के संपादक थे, तथापि संपादन का वास्तविक भार-वहन गांधी जी ही कर रहे थे। यह अखबार साप्ताहिक था।

⇒ आरंभ में यह अखबार 4 भाषाओं (तमिल, इंग्लिश, गुजराती और हिंदी) में निकलता था, परंतु बाद में तमिल व हिंदी भाषा में इसके प्रकाशन को बंद कर दिया गया।

फीनिक्स और टॉलस्टाय फॉर्म -

⇒ गांधी जी ने 30 मई 1902 में जोहांसबर्ग में टॉलस्टाय फार्म की स्थापना की थी।

⇒ इस फॉर्म के लिए लगभग एक हजार एकड़ जमीन उनके जर्मन दोस्त हरमन कालेनबाख ने प्रदान की थी।

⇒ गांधी जी एवं कालेनबाख क्रमशः एकदूसरे को दोनो 'अपर हाउस' एवं 'लोअर हाउस' कहा करते थे।

⇒ टॉलस्टाय फॉर्म की स्थापना प्रसिद्ध रूसी विद्वान लियो टॉलस्टाय के नाम पर की गई थी, जिनके विचारों से गांधी जी प्रभावित थे।

⇒ उनके उपन्यास 'युद्ध और शांति' तथा 'अन्ना करेनिना' साहित्यिक जगत की क्लासिक रचनाएं मानी जाती हैं।

⇒ गांधी जी ने 2 सितम्बर 1904 को डरबन में 'फीनिक्स आश्रम' की स्थापना की।

हिन्द स्वराज्य की रचना -

⇒ 1909 में गांधी जी को एक बार भारतीयों के अधिकारों के संबंध में विचार-विमर्श हेतु दक्षिण अफ्रीका से ब्रिटेन जाना पड़ा।

⇒ वहां से दक्षिण अफ्रीका पुनर्वापसी के दौरान 'किल्डोनन कैसल' नामक जहाज पर अपनी पूरी यात्रा के दौरान ही गुजराती भाषा में अपने एक प्रसिद्ध ग्रंथ 'हिंद स्वराज्य' की रचना कर डाली।

⇒ इसे सर्वप्रथम दिसम्बर 1909 में 'इंडियन ओपीनियन' में गुजराती में प्रकाशित की गई। जनवरी 1910 में इसका पुस्तकाकार रूप प्रकाशित हुआ।

धार्मिक
विचारधारा
विकेन्द्रीकरण
Trusteeship

Digvijay Sir GS

⇒ यह महात्मा गांधी के दर्शन की बीज पुस्तक है, गांधीवाद को समझने की कुंजी है।

⇒ 9 जनवरी 1915 को गांधी जी अंतिम रूप से दक्षिण अफ्रीका से 'एस. एस. सुदीव' नामक जहाज से बंबई के अपोलो बंदरगाह पर उतरे। उनका स्वागत एक राष्ट्रीय वीर की तरह किया गया।

साबरमती आश्रम –

⇒ उन्होंने अहमदाबाद के निकट कोचरब गांव में एक आश्रम 'सत्याग्रह आश्रम' 25 मई 1915 को स्थापित की।

⇒ जुलाई 1917 में आश्रम साबरमती नदी के किनारे बनाया गया, जो बाद में साबरमती आश्रम के नाम से प्रसिद्ध हुआ। इसमें गुजरात के उद्योगपति अंबालाल साराभाई ने महत्वपूर्ण आर्थिक सहयोग दिया।

⇒ गांधी जी ने इस आश्रम में (1915 – 1933) तक निवास किया।

⇒ जब वे साबरमती में होते थे, तो एक छोटी सी कुटिया में रहते थे, जिसे आज भी 'हृदय कुंज' कहा जाता है।

⇒ हृदय कुंज का नामकरण काका साहब कालेकर ने किया था। यहीं से गांधी जी ने ऐतिहासिक दांडी मार्च की शुरूआत की थी।

⇒ हृदय कुंज के दाईं ओर नंदिनी है। यह इस समय अतिथि कक्ष है, जहां देश – विदेश से आए हुए अतिथि ठहराए जाते थे।

thank you

क्या पढ़ा?

1. गिरमिटिया मजदूर
2. ग्रीनपैंफलेट
3. बोर युद्ध, 4. टॉलस्टॉय फार्म
5. हिन्द स्वराज
6. नटाल इंडियन कांग्रेस
7. फीनिक्स आश्रम